CHAPTER 4, डायरी के पन्ने

PAGE 77, अभ्यास

12:1:4:अभ्यास:1

"यह साठ लाख लोगों की तरफ़ से बोलने वाली एक आवाज़ है। एक ऐसी आवाज़, जो किसी संत या कवि की नहीं, बल्कि एक साधारण लड़की की है।" इल्या इहरनबुर्ग की इस टिप्पणी के संदर्भ में ऐन फ्रैंक की डायरी के पठित अंशों पर विचार करें।

उत्तर: ऐन फ्रैंक की डायरी में ऐन ने द्वितीय विश्वयुद्ध के समय यहूदी परिवारों पर हुए अकल्पनीय यातनाओ का वर्णन किया है इसलिए निःसंदेह ये डायरी एक ऐतिहासिक दौर का जीवंत दस्तावेज़ तो है ही लेकिन साथ ही ये ऐन के निजी सुख-दुःख और भावनात्मक उथल-पुथल का भी जीवंत दस्तावेज़ भी है।ऐन एक पंद्रह बरस की बच्ची थी। हिटलर के नस्लवाद के प्रति विद्रोह का इन्हें भी शिकार बनना पड़ा था । हिटलर पूरे विश्व से यहूदियों को मिटा देना चाहता था और

उन पर अपमानजनक नियम कानून थोपता रहता था । हिटलर के डर से यहूदी छिपते फिरते थे वे अंधेरो कमरों में जीवन जीने के लिए विवश थे। पकडे जाने पर उन्हें यातनाये दी जाती थी। वे हमेशा नाज़ी फौज के डर की वजह से खौफ में रहते थे । प्राप्त दस्तावेज़ों के आधार पर देखा, जाए तो हिटलर ने 60 लाख यहूदियों का नरसंहार किया। यह अब तक का सबसे बड़ा नरसंहार है।

ऐन फ्रेंक ऐसी ही यहूदी परिवार से थी। वह कोई संत या कवि नहीं थी। वह एक साधारण बच्ची थी। उसे हिटलर के डर से उसको दो साल तक छिपकर रहना पड़ा। उसकी डायरी में हिटलर का भय ,उसका आतंक इस डायरी को पढ़कर पता चलता है। वह अनजाने में ऐसे हज़ारों लोगों का प्रतिनिधित्व करने लगती है, जो उसी के समान इस यातना को झेल रहे हैं।इसलिए इल्याइहरनबुर्ग की यह टिप्पणी की “यह साठ लाख लोगों की तरफ से बोलने वाली एक आवाज़ है।एक ऐसी आवाज़ जो किसी संत या कवि की नहीं,बल्कि एक साधारण सी लड़की की है”।

12:1:4:अभ्यास:2

"काश कोई तो होता जो मेरी भावनाओं को गंभीरता से समझ पाता। अफ़सोस, ऐसा व्यक्ति मुझे अब तक नहीं मिला ....।" क्या आपको लगता है कि ऐन के इस कथन में उसके डायरी लेखन का कारण छिपा है?

उत्तर: उपरोक्त पंक्तियों में, एन और उसकी डायरी के बीच संबंध पूरी तरह से स्पष्ट होता है। उसके यह कहने से स्पष्ट है कि उसके आसपास कोई भी ऐसा नहीं था जो उसकी भावनाओं को गंभीरता से समझने। इसलिए उसने अपनी दिल की बातो को डायरी के साथ साझा करने के बारे में सोचा।
ऐन एक साधारण लड़की थी। उन्होंने अपनी पढ़ाई सामान्य तरीके से की, लेकिन उसे सबसे कठोर माना जाता था। उसे हर समय डांट सुनना पड़ता था। वह एक जगह यह भी लिखती है कि "हर समय, इच्छाएं, विचार, इरादे और डांट का डर मेरे दिमाग में बना रहता था। मैं वास्तव में उतना घमंडी नहीं हूं जितना लोग मेरे बारे में सोचते हैं। मैं अपनी कमजोरियों और खामियों को अच्छी तरह जानती हूँ।"लोग मुझे इतना अक्खड़ और तीस मार खां क्यों मानते हैं वह

लिखती है " कोई मुझे नहीं समझता " इस प्रकार ऐन की टिप्पणियों से पता चलता है कि ऐन को समझने वाला कोई भी नहीं था जो उसके अकेलेपन का सबसे बड़ा कारण बन गया।

12:1:4:अभ्यास:3

'प्रकृति-प्रदत्त प्रजनन -शक्ति के उपयोग का अधिकार बच्चे पैदा करें या न करें अथवा कितने बच्चे पैदा करें - इस की स्वतंत्रता स्त्री से छीन कर हमारी विश्व -व्यवस्था ने न सिर्फ़ स्त्री को व्यक्तित्व- विकास के अनेक अवसरों से वंचित किया है बल्कि जनांधिक्य की समस्या भी पैदा की है। ' ऐन की डायरी के 13 जून, 1944 के अंश में व्यक्त विचारों के संदर्भ में इस कथन का औचित्य ढूँढ़ें।

उत्तर:ऐन ने अपनी डायरी के पन्नो में औरतों के अधिकार और उन पर हो रहे शोषण के बारे में भी अपनी चिंता व्यक्त की है ऐन कहती है इस समाज में औरतों को उनके हिस्से का सम्मान नहीं मिल पता है । इस पुरुष प्रधान समाज में पुरुषों ने औरतों पर शुरू से ही इस बात पर शासन करना शुरू कर दिया कि वे उनकी तुलना में शारीरिक रूप से अधिक बलवान

और हर कार्य करने के लिए सक्षम हैं,किसी घर को चलने में पुरुष का ही पूरा योगदान रहता है पुरुष मेहनत कर के धन कमाता है और परिवार और बच्चों को पालता-पोसता है पुरुष हमेशा घर में अपनी और अपनी मनमर्जी चलाता है I लेकिन आज के समाज में इस स्थिति में परिवर्तन हुआ है। आज औरतों को बराबर का हक प्रदान किया जा रहा है शिक्षा,काम तथा प्रगति ने औरतों की आँख खोली हैं I औरत मानव जाती को जीवंत रखने के लिए असहाय पीड़ा से गुजरती है समाज को बढानें में उनका जितना संघर्ष रहता है उतना संघर्ष तो एक सैनिक भी नहीं करता है।

ऐन ने ये कभी भी नहीं कहा है कि औरतों को बच्चे को जन्म देना बंद कर देना चाहिए,क्यों की ये एक प्रकृति का नियम है और प्रकृति ऐसा चाहती है कि औरतें ऐसा करें इसलिए औरतों को ये कार्य अतिअवश्यक करना चाहिए लेकिन समाज से ये गुजारिश भी है की वो औरतों के इस योगदान का सराहना करना चाहिए I

12:1:4:अभ्यास:4

"ऐन की डायरी अगर एक ऐतिहासिक दौर का जीवंत दस्तावेज़ है , तो साथ ही उसके निजी सुख -दुख और

भावनात्मक उथल-पुथल का भी। इन पृष्ठों में दोनों का फ़र्क मिट गया है।" इस कथन पर विचार करते हुए अपनी सहमति या असहमति तर्कपूर्वक व्यक्त करें।

उत्तर:ऐन एक यहूदी लड़की थी । जब उसने अपना होश संभाला तब वो दौर था । जब हिटलर की सेना यहूदियों पर अत्याचार बरपा रही थी । उनकी यातनाओं का शिकार सारे यहूदियों के साथ - साथ कहीं न कहीं ऐन का आंतरिक मन भी था । उस समय वो यहूदी कैंपो में रहती थी । यहूदी हमेशा हिटलर की नाज़ी सेना से छुप कर इधर उधर भागते और छिपते रहते । ऐन को भी छिप कर रहना पड़ता था जिससे उसकी भावनाओं को पीड़ा पहुंचती थी जिसका व्यक्तिगत रूप उसके पूरे जीवन पर प्रभाव पड़ता था और ,समानांतर रास्ते पर ऐन की भावनात्मक पीड़ा भी चल रही थी और यही वजह है कि दोनों तड़प और वेदना एक दूसरे में समाकर एक सामान्य पीड़ा बन गई है और इसलिए दोनों पृष्ठों में भेद ही नहीं बचा ।

ऐन कि इस डायरी में उस समय की राजनैतिक स्थिति एवं युद्ध की विभीषिका का जीवंत वर्णन मिलता है लेकिन साथ ही

ये ऐन के निजी सुख-दुःख और भावनात्मक उथल-पुथल का भी जीवंत दस्तावेज़ है।

12:1:4:अभ्यास:5

ऐन ने अपनी डायरी 'किट्टी' (एक निर्जीव गुड़िया) को संबोधित चिट्ठी की शक्ल में लिखने की ज़रूरत क्यों महसूस की होगी?

उत्तर: जब इंसान अकेला होता है। उसके मन में अनेक कल्पनाओं का जन्म होता है और उसकी आवश्यकता ही अविष्कार की जननी होती है। जब एन निर्वासन में थी, वह केवल आठ-दस साल की थी, तो उससे बात करने और उसकी भावनाओं को समझने वाला कोई नहीं था और वह बड़ों की बात सुनकर ऊब चुकी थी । इस मामले में, एन एक निर्जीव गुड़िया को अपना काल्पनिक दोस्त बनाती है और उसे संबोधन और संवाद करती है और एक डायरी के माध्यम से अपने अनुभवों और भावनाओं को व्यक्त करती है।